विचार बिन्दु

जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए बस करना बाकी रह जाता है।
–इटैलियन कहावत

काश! मुझे यह नहीं लिखना पड़ता कि मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है!

मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है। यह लिखकर भी मैं अपनी पूरी व्यथा का एक बहुत छोटा अंश ही सम्प्रेषित कर पा रहा हूं। मैं जन्मजात भारतीय हूं और मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व रहा है, लेकिन अब लग रहा है कि मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व करने का कोई अधिकार नहीं रह गया है? घमण्डी, बडबोले, बदमिजाज़ और अमानवीय डोनाल्ड ट्रम्प के अमरीका ने जिस वहशी और अपमानजनक तरीके से मेरे एक सौ चार नागरिक बंधुओं को भारत भेज कर हमारे स्वाभिमान को चकनाचूर किया है वह जितना दुखद है उससे भी ज़्यादा दुखद और लज्जाजनक यह है कि हमारे सरकारी वक्तव्य ने अमरीका के इस कृत्य को सहज स्वाभाविक बताया है। किसी भी संकट की घड़ी में हम अपने देश की सरकार से यह उम्मीद करते हैं कि वह हमारी रक्षा के लिए, हमारा मान बचाने के लिए आगे आएगी लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सरकार मुंह में दही जमाए बैठी है, जैसा वह पिछले काफी समय से करने लगी है। जब उसे अपना गुणगान करना होता है, बढ़-चढ़कर बातें करनी होती है, विपक्षियों पर प्रहार करना होता है,वर्तमान की असफलताओं का ठीकरा 1964 में दिवंगत हो चुके जवाहर लाल नेहरू के माथे फोड़ना होता है तब उसकी मुखरता देखते ही बनती है। हम विश्व गुरु हो जाते हैं, दुनिया की सुपरपॉवर बन जाते हैं, दुनिया के बड़े नेता हमारे नेता के निजी मित्र प्रचारित कर दिये जाते हैं, दुनिया भर के देशों में भाड़े की भीड़ जुटा कर अपनी जयजयकार करवा ली जाती है लेकिन जब देश पर किसी भी तरह का कोई संकट आता है तो हम मौन हो जाते हैं। और या फिर कोई इतर नाटक कर समस्या से ध्यान बंटाने का बेहूदा प्रयास करने लग जाते हैं। इस बार भी यही हुआ है लेकिन इस बार तो जैसे अति ही हो गई है।

अमरीका ने वहां अवैध रूप से रह रहे भारतीयों को जिस अमानवीय और अपमानजनक तरीके से भारत भेजा उसके बारे में जानकर किसी भी भारतवासी का खून खौल सकता है। एक अमरीकी सैन्य विमान में 36 घण्टे से भी अधिक समय तक हाथों में हथकड़ी और पांवों में जंजीर बंधे पंजाबी लोगों को विमान में अपनी पगड़ी तक उतारने को मज़बूर किया गया। अमरीकी सैन्य विमान को दिल्ली में नहीं अमृतसर में उतारा गया और मीडिया को उसके पास भी नहीं फटकने दिया गया। यहीं यह भी याद कर लें कि अमरीका में अवैध रूप से केवल भारतीय ही नहीं रहते रहे हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार अमरीका में लगभग ढाई लाख चीनी भी अवैध रूप रह रहे हैं। लेकिन उनके साथ अमरीका ने ऐसा अपमानजनक बर्ताव नहीं किया। इसकी एक वजह शायद यह भी है कि दुनिया के किसी भी देश में अगर चीनी नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार होता है तो चीन तुरंत उस देश के कुछ नागरिकों को अपने देश की जेलों के भीतर कर देता है। चीन ने अमरीका के अनेक नागरिकों को सीआईए के लिए जासूसी करने या नशीली दवाएं बेचने के अपराध में जेल में बन्द कर रखा है. इसलिए अवैध रूप से अमरीका में रह रहे चीनी नागरिकों को किसी सैन्य विमान में हथकड़ियों-बेड़ियों में जकड़ कर चीन लौटाने की बात अमरीका शायद सोच भी नहीं सकता। वैसे सवाल यह भी है कि अमरीका अपने देश से अवैध नागरिकों को बाहर निकाले, यह तो ठीक लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अमानवीय और अपमानजनक तरीका अपनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी? क्या वह हमने अपनी औकात बताना चाह रहा था?

"उसने कुछ अन्य देशों के साथ भी ऐसा ही करना चाहा। लेकिन उन्होंने क्या किया? एक छोटा-सा देश है कोलंबिया। जनसंख्या मात्र पांच दशमलव दो करोड़। अर्थव्यवस्था भी कोई ख़ास बड़ी नहीं, दुनिया में 39 वें नम्बर पर। याद रखा जाए कि हम अपनी अर्थव्यवस्था को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बताते नहीं थकते हैं। अमरीका ने एक मालवाहक जहाज सी-17 से जब कोलंबियाई नागरिकों को कोलंबिया भेजा तो वहां के राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो ने उस अमरीकी विमान को अपने यहां उतरने देने की अनुमति देने से मना करने का साहस दिखाया। पेट्रो ने कहा, प्रवासी अपराधी नहीं होता है और उसके साथ मनुष्योचित गरिमामापूर्ण बर्ताव किया जाना चाहिए। यही वजह है कि मैंने उन अमरीकी सैन्य वायुयानों को लौटा दिया है जो कोलंबियाई प्रवासियों को ला रहे थे। मैं नहीं चाहता कि मेरे देश के प्रवासी ऐसे देश में रहें जो उन्हें अपने यहां नहीं रखना चाहता है, लेकिन अगर वह देश उन्हें हमारे यहां भेजना चाहता है तो वह उन्हें उनके और मेरे देश के प्रति सम्मान और गरिमा के साथ भेजे। हम अपने साथी नागरिकों का स्वागत बिना उनके साथ अपराधियों जैसा बर्ताव किए, नागरिक विमानों में करेंगे। कोलंबिया का सम्मान बना रहे!" और अमरीकी विमान हवा में चक्कर लगाकर लौट गया। इसके बाद उस छोटे-से देश कोलंबिया ने अपने यहां से दो पैसेंजर वायुयान अमरीका भेजे और अपने नागरिकों को ससम्मान अपने यहां बुलाया। और केवल इतना ही नहीं, जब कोलंबियाई नागरिकों को लेकर ये विमान वहां की राजधानी बोगोटा पहुंचे तो ख़ुद राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो उस जहाज के भीतर गए और अपने नागरिकों से कहा, "अब आप आज़ाद हैं और अपनी मातृभूमि पर हैं, आप निराश न हों। सरकार आपके लिए हर संभव मदद उपलब्ध कराएगी और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर कोलंबिया में इज़्ज़त की ज़िंदगी जीने में मदद करेगी.यह होती है एक ज़िम्मेदार सरकार। हमने क्या किया? अपने नागरिकों को अपमानित होने दिया। बेशक उनमें से बहुत सारे लोग ग़लत तरीकों से अमरीका गए थे। बहुत संभव है कि बहुत सारे ग़लत तरीकों से स्वेच्छा से न गए हों और ठगी के शिकार हुए हों। विचारणीय यह भी है कि जिस देश का मूल मंत्र जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी है उस देश के नागरिक, और उस देश के नागरिक जहां हर इलाके में यह कथन प्रचलित है कि चाहे हम रूखा-सूखा खा लेंगे लेकिन अपना इलाका छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाएंगे, वे क्यों अवैध तरीकों से अमरीका जाने की जुगत भिड़ाते हैं, और अगर जा पाने में सफल हो जाते हैं तो भी वहां निहायत अमानवीय हालात में रह कर अपना पेट पालते हैं! आप असंवेदनशील होकर बहुत आसानी से कह सकते हैं कि वे डॉलर की चकाचौंध में यह सब करते हैं, यथार्थ इतना सपाट नहीं है। असल में हम अपने नागरिकों के लिए पर्याप्त रोज़गार पैदा कर पाने में बुरी तरह नाकामयाब रहे हैं। भले ही चुनावों के दौरान हमने करोड़ों नौकरियां देने के वादे किए हों, वे वादे मूर्त रूप ले पाते इसके लिए हमने कुछ नहीं किया। ऐसे में अगर हमारे नागरिक इधर उधर जाने की जुगत भिड़ाएं तो वे गुस्से के नहीं सहानुभूति के पात्र हैं। और फिर इस सबके ऊपर, अंततः तो वे भारतीय हैं और उनकी परवाह अगर उनका अपना देश नहीं करेगा तो कौन करेगा? कोलंबिया के राष्ट्रपति अपने नागरिकों को आश्वस्ति प्रदान कर सकते हैं, हमारे बड़े नेताओं में यह संवेदनशीलता और मानवीयता क्यों नहीं है?

अमरीका ने एक मालवाहक जहाज सी-17 से जब कोलंबियाई नागरिकों को कोलंबिया भेजा तो वहां के राष्ट्रपति गुस्तावोपेट्रो ने उस अमरीकी विमान को अपने यहां उतरने देने की अनुमति देने से मना करने का साहस दिखाया। पेट्रो ने कहा, प्रवासी अपराधी नहीं होता है और उसके साथ मनुष्योचित गरिमामापूर्ण बर्ताव किया जाना चाहिए।

बेशक अमरीका एक शक्तिशाली देश है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई उसकी मनमानी को सर झुका कर स्वीकार कर ले। ज़रा देखें मैक्सिकन राष्ट्रपति क्लाउडियाशिनबाम ने ट्रम्प को क्या कहा है। उनका कहा एक-एक शब्द गौर तलब है: तो, आपने दीवार बनाने के लिए वोट दिया... खैर, प्यारे अमेरिकियों, भले ही आपको भूगोल के बारे में ज़्यादा जानकारी न हो, क्योंकि अमेरिका आपके लिए आपका देश है, महाद्वीप नहीं, इसलिए यह ज़रूरी है कि आप पहली ईंट रखे जाने से पहले ही पता लगा लें कि उस दीवार के पार 7 अरब लोग हैं।

लेकिन चूंकि आप वास्तव में 'लोग' शब्द नहीं जानते, इसलिए हम उन्हें 'उपभोक्ता' कहेंगे। 7 अरब उपभोक्ता 42 घंटे से भी कम समय में अपने को सैमसंग या हुआवेई डिवाइस से बदलने के लिए तैयार हैं।

वे लेवी की जगह ज़ारा या मासिमोडूटी भी ले सकते हैं।

छह महीने से भी कम समय में, हम आसानी से फ़ोर्ड या शेवरले की कारें खरीदना बंद कर सकते हैं और उनकी जगह टोयोटा, किआ, माज़दा, होंडा, हुंडई, वोल्वो, सुबारू, रेनॉल्ट या बीएमडब्ल्यू ले सकते हैं, जो तकनीकी रूप से उनके द्वारा उत्पादित कारों से बेहतर हैं।

वे 7 बिलियन लोग डायरेक्ट टीवी की सदस्यता लेना भी बंद कर सकते हैं, और हम ऐसा नहीं करना चाहते, लेकिन हम हॉलीवुड की फिल्में देखना बंद कर सकते हैं और अधिक लैटिन अमेरिकी या यूरोपीय प्रोडक्शन देखना शुरू कर सकते हैं, जिनमें बेहतर गुणवत्ता, संदेश, सिनेमाई तकनीक और सामग्री है।

हालांकि यह अविश्वसनीय लग सकता है, हम डिज्नी को छोड़ सकते हैं और कैनकन, मैक्सिको, कनाडा या यूरोप में एक्सकेरेट रिसॉर्ट जा सकते हैं: दक्षिण, पूर्वी अमेरिका और यूरोप में अन्य बेहतरीन गंतव्य हैं।

और भले ही आपको विश्वास न हो, मैक्सिको में भी मैकडॉनल्ड्स से बेहतर बर्गर हैं और उनमें बेहतर पोषण सामग्री है।

क्या किसी ने अमेरिका में पिरामिड देखे हैं? मिस्त्र, मैक्सिको, पेरू, ग्वाटेमाला, सूडान और अन्य देशों में अविश्वसनीय संस्कृतियों वाले पिरामिड हैं।

जानें कि प्राचीन और आधुनिक दुनिया के अजूबे कहाँ हैं... उनमें से कोई भी अमेरिका में नहीं है... ट्रम्प पर शर्म आती है, उन्होंने इसे खरीदा और बेचा होगा!

हम जानते हैं कि एडिडास मौजूद है, न कि केवल नाइकी और हम पैनम जैसे मैक्सिकन टेनिस जूते पहनना शुरू कर सकते हैं। हम जितना सोचते हैं, उससे कहीं ज़्यादा जानते हैं।

उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि अगर ये 7 बिलियन उपभोक्ता उनके उत्पाद नहीं खरीदते हैं, तो बेरोजगारी होगी और उनकी अर्थव्यवस्था (नस्लवादी दीवार के भीतर) इतनी ढह जाएगी कि वे हमसे इस बदसूरत दीवार को तोड़ने की भीख मांगेंगे।

हम ऐसा नहीं चाहते थे लेकिन.. आप दीवार चाहते हैं, आपको दीवार मिलती है। ईमानदारी से आभार के साथ।

मेक्सिको की राष्ट्रपति ने अमरीका को उसकी आर्थिक सीमाएं बताते हुए बेबाक धमकी दे डाली। लेकिन हम क्या करते हैं? हमारा सारा ज़ोर अपने देश के अल्पसंख्यकों की रोज़ी-रोटी छीनने तक सीमित रह जाता है। अमरीका जैसा देश हमारे राष्ट्रीय सम्मान को ध्वस्त करे तो हम ऐसा कोई प्रतीकात्मक विरोध प्रदर्शन तक करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। काश! ऐसा साहस हमारी सरकार ने भी दिखाया होता। तब मुझे यह नहीं लिखना पड़ता कि मेरा माथा शर्म से झुका हुआ है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

ये लक्षण विश्व गुरु के तो नहीं

राजेन्द्र भाणावत

5 फरवरी 2025 को तीन प्रमुख घटनाएं हुई– पहली, दिल्ली विधानसभा के लिए मतदान, दूसरी, प्रयागराज में चल रहे कुंभ के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दौरा और उनके द्वारा संगम पर किया नौका विहार और तीसरी, अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे 104 भारतीयों को लेकर अमेरिका के वायु सेवा के विमान का अमृतसर पहुंचना। इन तीन मुख्य घटनाओं में से एक का सभी राष्ट्रीय चैनलों पर भरपूर प्रसारण किया गया, विशेष कर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा संगम में डुबकी लगाने के वीडियो दिन भर प्रत्येक चैनल पर निरंतर चलते रहे। इन दो घटनाओं के बीच में जो तीसरी घटना थी, वह मीडिया में कोई स्थान नहीं पा सकी। केवल सोशल मीडिया पर अवश्य, कभी कभार कुछ समाचार और वीडियो जरूर आ गए।

वैसे तो अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे भारतीयों को कई वर्षों से निरंतर यहां भेजा जा रहा है। इस बार डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति बनते ही विदेशी अवैध नागरिकों के प्रति कड़ा रुख अपनाया गया। ट्रंप ने शपथ ग्रहण करते ही स्पष्ट कर दिया था कि अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे लोगों को, वे अपने-अपने देश में तत्काल भेज देंगे। स्वदेश रवाना करने से पूर्व इन्हें अमेरिका में नजर बंद रखा गया।

अमेरिकी वायुसेना का विमान जब 104 भारतीयों को लेकर, अमृतसर में 5 फरवरी को उतरा, तब इन सबके हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ियां थीं। इनमें 25 महिलाएं और 12 बच्चे भी थे। इनमें सर्वाधिक संख्या गुजरात, पंजाब हरियाणा के रहने वालों की थी। इस पूरी खबर को सभी प्रमुख मीडिया चैनलों ने लगभग ब्लैकआउट ही कर दिया गया था। जब सोशल मीडिया पर इसके समाचार और वीडियो प्रसारित होने लगे तो फिर संसद में संसद सदस्यों ने इस बारे में सरकार से जवाब तलब किया। इसे 145 करोड़ भारतीयों का अपमान बताया गया। यह विडंबना ही है कि जिस समय प्रधानमंत्री संगम में डुबकी लगा रहे थे, उसी समय 104 भारतीय नागरिकों को कैदियों या आतंकवादियों की तरह भारत लाया गया। मीडिया के किसी भी व्यक्ति को किसी भारतीय से बात नहीं करने दी गई।

यह उल्लेखनीय है कि भारत के साथ ही पांच अन्य देशों ग्वाटेमाला, पेरू, मेक्सिको, होंडुरास और कोलंबिया के नागरिकों को भी इसी प्रकार संबंधित देशों में भेजा गया। कोलंबिया के राष्ट्रपति पेट्रो ने अमेरिकी वायु सेना के विमान को अपने देश में उतरने की अनुमति नहीं दी और स्पष्ट कह दिया कि हम अपने नागरिकों को अपना विमान भेजकर बुला लेंगे। अमेरिका को इस बात पर सहमति व्यक्त करनी पड़ी। तब, कोलंबिया के रहने वाले अवैध नागरिकों को विशेष यात्री विमान के माध्यम से गरिमा पूर्ण तरीके से वापस कोलंबिया लाया गया। कोलंबिया पहुंचने पर वहां के राष्ट्रपति इन लोगों से मिलने वायुयान में गए।

प्रश्न यह है कि जब कोलंबिया के राष्ट्रपति अपने नागरिकों की गरिमा बचाए रखते हुए अमेरिकी सरकार को मजबूर कर सकते हैं कि कोलंबिया के विमान से उन्हें लाया जाएगा, तो भारत के प्रधानमंत्री ऐसा क्यों नहीं कर सके? यह एक प्रकार से, भारत की कूटनीतिक असफलता ही मानी जाएगी। यह सही है कि ये सब अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे थे और उन्हें वहां रहने का कोई अधिकार नहीं था।

भारत के प्रधानमंत्री मोदी, भारत की तेजी से होने वाली प्रगति का गुणगान करते रहे हैं और भारत को कई बार विश्व गुरु कहने से भी नहीं चूकते हैं। जिस प्रकार 104 भारतीयों को आतंकवादियों की तरह हथकड़ियों और बेड़ियों में झकड़ कर इन्हें अमानवीय तरीके से भेजा गया, वह किसी भी विश्व गुरु के लिए सम्मान का विषय तो नहीं ही कहा जा सकता।

कहा जाता है कि जिस विमान में भारतीयों को लाया गया, उसमें केवल एक टॉयलेट था और उसका उपयोग करते समय भी उसका दरवाजा बंद नहीं किया गया और न ही संबंधित व्यक्ति की बेड़ियां और हथकड़ियां खोली गईं। प्रधानमंत्री मोदी, स्वयं को ट्रंप का परम मित्र बताते रहे हैं और उन्हें उनके प्रथम नाम 'डोनाल्ड' से सार्वजनिक रूप से संबोधित भी करते हैं और उन्हें गले भी लगाते हैं। इन सब के बावजूद, भारत के प्रति अमेरिका का यह व्यवहार शर्मनाक है। इस बारे में भारत के विदेश मंत्री एवं विदेश मंत्रालय द्वारा किसी भी प्रकार का विरोध प्रकट न करना भी समझ से परे है।

भारत ने किस प्रकार अमेरिका के सामने समर्पण - सा कर दिया है, यह इसी से स्पष्ट होता है कि अमेरिका द्वारा भारत से आयात होने वाली वस्तुओं पर ड्यूटी बढ़ाए जाने के निर्णय से पूर्व ही, भारत ने संकेत समझते हुए अमेरिका से भारत में आने वाली हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिलों पर आयात शुल्क 20 प्रतिशत कम कर दिया ताकि उनका व्यवसाय यहां पर अधिक हो सके।

भारतीयों के साथ अमेरिका में कैसा व्यवहार किया गया, इसकी जानकारी तो जब लौटे हुए यात्री मीडिया से बात करेंगे, तब सामने आएगी। जो समाचार मिल रहे हैं, वे इस बात को स्पष्ट करते हैं कि उनके साथ गरिमा पूर्ण व्यवहार तो दूर की बात है, मानवीय व्यवहार भी नहीं किया गया। अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे 17000 भारतीयों को चिन्हित कर लिया गया है और शीघ्र ही इन्हें भी भेजा जाएगा।

अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे भारतीयों को वापस भेजने का क्रम कई सालों से चल रहा है, किंतु इस प्रकार से अपमानजनक रूप में उन्हें भेजने की कार्रवाई अमरीका द्वारा पहली बार की गई है।

कुल मिलाकर, हम तो यही कह सकते हैं कि जिस प्रकार का अपमानजनक व्यवहार अमेरिका ने भारत के साथ किया है, वह भारत के विश्व गुरु होने के दावे को एकदम ध्वस्त कर देता है। अब भी, भारत के विदेश मंत्रालय को विरोध दर्ज करना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि वे इस प्रकरण को, जब भी ट्रंप से मिलेंगे, उनके समक्ष उठाएंगे।

यहां एक और प्रश्न विचारणीय है कि भारत से इतने सारे लोग अवैध रूप से अत्यंत कष्टप्रद परिस्थितियों में क्यों अमेरिका जाना चाहते हैं? कारण स्पष्ट है, भारत में रोजगार और गरिमा पूर्ण जीवन यापन करने के समुचित अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

जो सरकार शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने का दावा करती है और देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने की बात कर रही है, उसे यह विचार करना चाहिए कि इतने अधिक लोग क्यों भारत की नागरिकता को छोड़ रहे हैं? अमेरिका में अवैध रूप से जाने वालों ने अपनी जमीन-जायदाद बेचकर लाखों रुपए एजेंटों को दिए हैं।यदि रोजगार के समुचित अवसर अपने ही देश में उपलब्ध हों तो भला क्यों कोई अपनी मातृभूमि को छोड़कर, विदेश में अमानवीय कष्ट सहने के लिए जाएगा?

गत कुछ समय से देखा गया है कि जब भी देश के समक्ष अटपटी स्थिति उत्पन्न होती है, प्रधानमंत्री मौन धारण लेते हैं, चाहे वह मणिपुर जाने का मामला हो, महाकुंभ में हादसे का मामला हो या फिर भारत के अपमान का मामला। देश उनसे यह अपेक्षा करता है कि वह अपनी ओर से देश को आश्वस्त करें कि वे किसी भी कीमत पर भारत के स्वाभिमान को ठेस नहीं लगने देंगे और जब भी किसी के द्वारा ऐसा करने का प्रयास किया जाएगा तो वे कड़ी कार्यवाही करेंगे।

सरकार को इसकी भी बहुत गहन जांच करनी चाहिए कि वे कौन लोग हैं जो भारतीय नागरिकों से बड़ी धनराशि लेकर, अच्छे जीवन के सपने दिखाकर अवैध रूप से अमेरिका भेजते रहे हैं? इस विषय पर अच्छी फिल्म 'डंकी' भी आई थी, जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार भारतीयों की जान जोखिम में डालकर उन्हें विदेश भेजा जाता है। ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी आपराधिक कार्यवाही करके उन्हें सजा दी जानी चाहिए, ताकि भविष्य में इनके जाल में फंसने से भोले-भाले नागरिकों को बचाया जा सके। फिलहाल तो देश इस अपमानजनक व्यवहार पर प्रधानमंत्री और भारत सरकार से कार्यवाही की प्रतीक्षा कर रहा है।

–राजेन्द्र भाणावत,
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

प्रभाशंकर उपाध्याय के व्यंग्य संग्रह "इनविजिबल इडियट" का विमोचन

प्रभाशंकर उपाध्याय की यह सातवीं पुस्तक है, इससे पहले उनके नाश्ता मंत्री का गरीब के घर, काग के भाग बड़े सहित चुनिंदा व्यंग्य प्रकाशित हो चुके हैं

सवाई माधोपुर, (निसं)। सूचना केंद्र में सवाई माधोपुर के सांस्कृतिक-साहित्यिक मंच बतलावण के तत्वाधान में राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकार कथाकार प्रभाशंकर उपाध्याय की पुस्तक "इनविजिबल इडियट" का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कवि राधेश्याम अटल ने की। विशिष्ट अतिथि हास्य कवि गोपीनाथ चर्चित गंगापुर सिटी थे। विमोचन समारोह में वरिष्ठ कवि ताऊ शेखावाटी ने भी शिरकत की।

उल्लेखनीय है कि प्रभाशंकर उपाध्याय की यह सातवीं पुस्तक है। इससे पहले उनकी नाश्ता मंत्री का गरीब के घर, काग के भाग बड़े, यादों के दरीचे, बेहतरीन व्यंग्य, बहेलिया (उपन्यास), चुनिंदा व्यंग्य प्रकाशित हो चुकी है। इस अवसर पर उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं रचनाशैली पर सवाई माधोपुर के ख्यातनाम कवि विनोद पदरज, पुस्तक की रचनाओं पर बात करते हुए कवि प्रभात ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरों से आगाह किया। चिंतक डॉक्टर रमेश वर्मा ने उपाध्याय की रचना धर्मिता पर बात की। वरिष्ठ कवि शिव योगी ने लेखक के साथ एक पुराना संस्मरण साझा किया।

राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकारप्रभाशंकर उपाध्याय की पुस्तक "इनविजिबल इडियट" का विमोचन हुआ।

जिला न्यायालय के प्रोटोकॉल एवं प्रशासनिक अधिकारी प्रवीण शर्मा ने नाश्ता मंत्री का गरीब व्यंग्य कथा का स्मरण करते हुए लेखक के साथ अपने अनुभव बताए। अध्यक्षीय उद्बोधन में राधेश्याम अटल ने व्यंग्य, तंज कटाक्ष व हास्य के अंतर्विभेद को स्पष्ट करते हुए कहा कि पुस्तकों की प्रासंगिकता कभी खत्म नहीं होगी भले ही वर्तमान में मोबाइल का चलन ज्यादा है पर हमें पुस्तकों की ओर ही लौटना पड़ेगा। विशिष्ट अतिथि गोपीनाथ चर्चित ने उपाध्यायजी के बचपन से जुड़े संस्मरणों को सुनाया।

- **कवि प्रभात ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरों से आगाह किया**

कार्यक्रम में इंटेक के को-ऑर्डिनेटर पदम खत्री, प्रधानाचार्य, दिलीप शर्मा जिला अध्यक्ष निजी स्कूल संस्थान, चंदा राजावत, चित्रकार सुनीता, शशि, चंद्रशेखर शर्मा, राजेश शर्मा, चंद्र प्रकाश शर्मा, राम गोपाल गुणसारिया सहित बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन लघुकथा लेखक व जिला न्यायालय सवाई माधोपुर में वरिष्ठ मुंसरिम के पद पर कार्यरत अनिल कुमार जैन द्वारा किया गया।

"बीकानेर थिएटर फेस्टिवल" को लेकर तैयारियां परवान पर

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में आयोजित होने जा रहे बीकानेर थिएटर फेस्टिवल की तैयारियां परवान पर है। देशभर के चर्चित नाटक बीकानेर शहर के विभिन्न ऑडिटरियम में मंचित किये जाएँगे जिसे बीकानेर के आमजन अपने परिवार सहित निःशुल्क देख सकेंगे।

आयोजन समिति के टी एम लालाणी ने बताया कि फेस्टिवल का हिस्सा बनने के लिए इस बार उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ प्रदेश के जयपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा से नाट्य दल बीकानेर आएंगे और अपने नाटकों का मंचन करेंगे। फेस्टिवल के दौरान देशभर के लगभग पांच सौ रंगकर्मियों का जमावड़ा बीकानेर में होगा और भारतीय रंगकर्म के वर्तमान स्वरूप, उपलब्धियों और चुनौतियों पर चर्चा की जायेगी।

आयोजन समिति के हंसराज डागा ने बताया कि इस बार बीकानेर थिएटर फेस्टिवल के दौरान नाटकों के मंचन के साथ प्रत्येक दिन देश के गुणी रंगकर्मियों के साथ युवा कलाकारों की मास्टर क्लास का आयोजन भी किया जाएगा। फेस्टिवल से जुड़े अर्थशास्त्री और शिक्षाविद् डॉ. पी एस वोहरा ने बताया कि इस साल के बीकानेर थिएटर फेस्टिवल में सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता राजेंद्र गुप्ता और हिमानी शिवपुरी अपना प्रसिद्ध नाटक 'जीना इसी का नाम है' प्रस्तुत करेंगे।

फेस्टिवल से जुड़े युवा रंगकर्मी सुनील जोशी ने बताया कि बीकानेर थिएटर फेस्टिवल के माध्यम से हमारे शहर के लोगो को थिएटर के प्रसिद्ध अभिनेताओं से रूबरू होने और अलग अलग तरह के मनोरंजक नाटकों को देखने का मौका मिलेगा। इस दौरान प्रदर्शनी और रंग-चर्चायें भी आयोजित होंगी। सभी नाटकों के मंचन में और रंग चर्चाओं में दर्शकों का प्रवेश निशुल्क होगा। आयोजन समिति के सदस्य विजय सिंह राठौड़ ने बताया कि आयोजन को सफल बनाने के लिए एक परामर्श मंडल बनाया गया है।

राशिफल सोमवार 10 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार विक्रम संवत 2081, पुर्नवसु नक्षत्र सांय 6:01 तक प्रीति योग दिन 10:26 तक, कौलव करण प्रातः 7:12 तक, चन्द्रमा आज दिनांक 11:57 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति : सुर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या। आज सवार्थसिद्धी योग सांय 6:01 से सूर्यादय तक है। रवि योग सांय 6:01 से आरम्भ होगा। आज सोम प्रदोष व्रत कल्पादि है।

श्रेष्ठ चौघडिया- अमृत : सुर्योदय से 8:14 तक शुभ 9:42 से 11:09 तक, चर 02:05 से 3:33 तक लाभ अमृत 3:33 में सूर्यास्त तक, राहुकाल 7:30 से 9:00 तक, सुर्योदय 7:11 सूर्यास्त 06:11

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से सम्पन्न होंगे। व्यावसायिक आय मे वृद्धि होगी।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुऐ कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होंगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। सम्भावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित यात्रा सम्भव है। नौकरी पेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियन्त्रण रखें। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

सिंह
आर्थिक वित्तिय मामलों में सन्तुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबन्ध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। दिन मे मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला
नवीन कार्यों के सम्बन्ध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नही है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुऐ कार्य बनने लगेंगे।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नही है।

मकर
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुऐ कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के सम्बन्ध में उचित सोच विचार हो सकता है। महत्त्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वन हो सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धित चिन्ता दूर होगी।

मीन
घर परिवार में अथितियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।